अप्रैल २०२६

अक्रम एक्सप्रेस

ऋषभदेव भगवान

संपादकीय

बालमित्रों,

हम सब जानते हैं कि चौबीस तीर्थंकर भगवान हैं। उनमें से प्रथम तीर्थंकर भगवान कौन थे? श्री ऋषभदेव भगवान, जिन्हें आदिनाथ भगवान के रूप में भी जाना जाता है। आदि अर्थात् शुरुआत। श्री ऋषभदेव भगवान ने किसकी शुरुआत की? लाखों साल पहले कैसा काल था? भगवान ने लोगों को क्या-क्या सिखाया? भगवान के परिवार में कौन-कौन था?

चलो, इस अंक में आश्चर्यजनक बातें जानते हैं और भगवान को हृदय में रखकर भक्ति भाव से उनकी आराधना करते हैं।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

April, 2026
Year 14, Issue : 01
Conti. Issue No.: 157
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2026, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

उस समय का काल

कई सालों पहले की यह बात है। उस ज़माने में अमृत जैसे मीठे फल मिलते थे और अमृत जैसा मीठा पानी बहता था। कुछ भी खाने के लिए चाहिए, तो कल्पवृक्ष से मिल जाता था। अरे, सिर्फ खाना ही नहीं, कल्पवृक्ष से जो भी माँगो, वह तुरंत मिल जाता था। कुछ भी चाहिए होता, तो उसे पाने के लिए काम नहीं करना पड़ता था। बस कल्पवृक्ष से माँगना ही होता था!

लोग मज़े से खाते-पीते, जंगल में घूमते-फिरते और मौज करते थे। उस ज़माने में मनुष्य का जन्म जोड़ों में ही होता था। यानी कि एक साथ जोड़े में पैदा होते थे। उन जोड़ों को युगलिया कहा जाता था। इसलिए उस काल को 'युगलिया काल' भी कहा जाता था। युगलियाओं का जीवन बहुत सुखी था। किसी का किसी के साथ कभी झगड़ा

नहीं होता था। पूरी जिंदगी बस आनंद, आनंद, आनंद ही रहता था!

यह उस समय की बात है, जब प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान का जन्म हुआ था। भगवान की माता श्री का नाम मरुदेवी था। जब तीर्थंकर भगवान मरुदेवी माता के गर्भ में आए, तब देवी-देवता भक्ति भाव और आनंद-उल्लास से मरुदेवी माता की सेवा में लग गए। देवियों ने मरुदेवी माता से कुछ प्रश्न पूछे। वे प्रश्न ऐसे थे कि सामान्य लोग उनके जवाब नहीं दे सकते थे। लेकिन मरुदेवी माता ने सभी प्रश्नों के जवाब दिए। इसका कारण यह था कि मरुदेवी माता के गर्भ में तीर्थंकर भगवान का जीव था।

भगवान का जन्म हुआ, तो देवता अपने-अपने विमानों में भगवान का जन्मोत्सव मनाने के लिए इकट्ठा हुए। पूरी पृथ्वी पर मानो आनंद छा गया। देवता भगवान को मेरु पर्वत पर ले गए और स्नान कराया। भगवान का प्रभाव गज़ब का था। भगवान इतने आकर्षक थे कि देवताओं को भी उनके पास से हटने का मन नहीं करता था। देवता भी रात-दिन भगवान की भक्ति और सेवा की कामना करते। धीरे-धीरे वैभव और लाड़-प्यार में भगवान का पालन-पोषण हुआ।

युवावस्था में पिता की आज्ञा होने पर ऋषभदेव भगवान का विवाह हुआ।

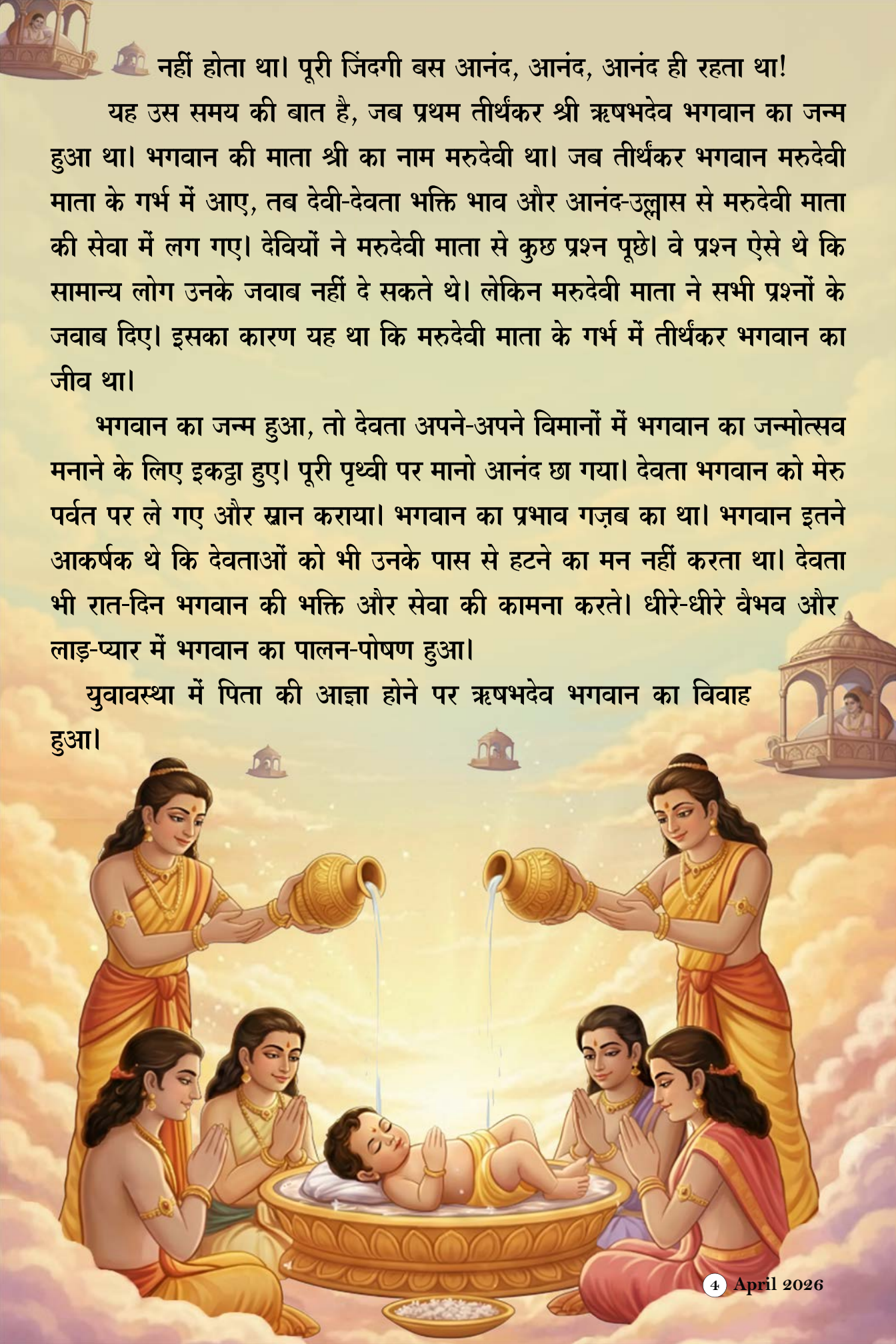

काल बदला

धीरे-धीरे काल बदला। कल्पवृक्ष कम हो गए। दिन-प्रतिदिन सुख कम होता गया। ऐसा समय आया कि कल्पवृक्ष के फल मिलने बंद हो गए।

कोई भी खेती-बाड़ी करना नहीं जानता था। सब लोग ऋषभदेव भगवान के पास शिकायत लेकर आए। भगवान ने सभी का खेती-बाड़ी करना सिखाया।

सभी लोग उगाया हुआ अनाज कच्चा ही खाने लगे। लेकिन वह अनाज किसी को पचता नहीं था। एक दिन सबने भगवान के पास जाकर शिकायत की, 'प्रभु, कोई उपाय बताइए। हमें कुछ भी खाया हुआ पचता नहीं है।'

अनाज को हाथ से मसलें, पानी में भिगोएँ और दोने में लेकर खाएँ। तो अपच नहीं होगा।

लोगों ने वैसा ही किया। लेकिन कुछ दिन बीते और अपच फिर से शुरू हो गया। इसलिए सब लोग फिर से भगवान के पास आए और शिकायत की कि खाया हुआ पचता नहीं है। भगवान ने दूसरे उपाय बताए, जो कुछ दिन चले।

इतने में एक दिन ज़ोर से हवा चली। पेड़ की बड़ी-बड़ी डालियाँ आपस में टकराईं और कड़ाके-धड़ाके होने लगे। अचानक दो डालियाँ आपस में रगड़ खाने से अग्नि उत्पन्न हुई और डालियाँ धू-धू करके जलने लगीं। लोगों ने पहले कभी अग्नि नहीं देखी थी। इसलिए अग्नि देखकर सब घबरा गए।

उन्हें लगा, 'चलो, इसे उठाकर फेंक देते हैं।' वे हाथ बढ़ाकर अग्नि पकड़ने गए, लेकिन उनके हाथ जल गए। सब लोग चिल्लाने लगे और चिल्लाते-चिल्लाते फिर से भगवान के पास पहुँचे।

प्रभु, जंगल में एक भूत आया है। वह सबको बहुत परेशान करता है। इसलिए उसका कुछ कीजिए।

उसे छूना मत। उसके आस-पास से घास हटा दो। उस पर लकड़ियाँ रखकर भिगोया हुआ अनाज पकाना। वह अनाज खाने से अपच नहीं होगा।

लोगों ने लकड़ियाँ इकट्ठा करके एक बड़ा अलाव बनाया और भिगोया हुआ अनाज सीधा अलाव में डाल दिया और अनाज के पकने का इंतज़ार करने लगे। थोड़ी ही देर में सारा अनाज जलकर खाक हो गया।

लोगों को लगा, 'यह तो अंदर कैसा जानवर है कि जितना देते हैं उतना खा जाता है। वापस तो कुछ देता ही नहीं।' सब निराश होकर फिर भगवान के पास गए।

भगवान ने उनकी शिकायत सुनी और सभी को मिट्टी के सुंदर बरतन बनाना सिखाया। सबने बरतन बनाए और उनमें अनाज पकाने लगे और पेट भर कर खाने लगे।

लोग बर्तनों में पकाने तो लगे, लेकिन इन बर्तनों को रखें कहाँ? भगवान ने सभी को घर बनाना सिखाया। लोग जंगल में घर बनाकर रहने लगे।

पर, घर क्या ऐसे ही अच्छे लगते हैं? कुछ सजावट तो करनी पड़ती है न? इसलिए श्री ऋषभदेव भगवान ने कुछ लोगों को चित्र बनाने की कला सिखाई।

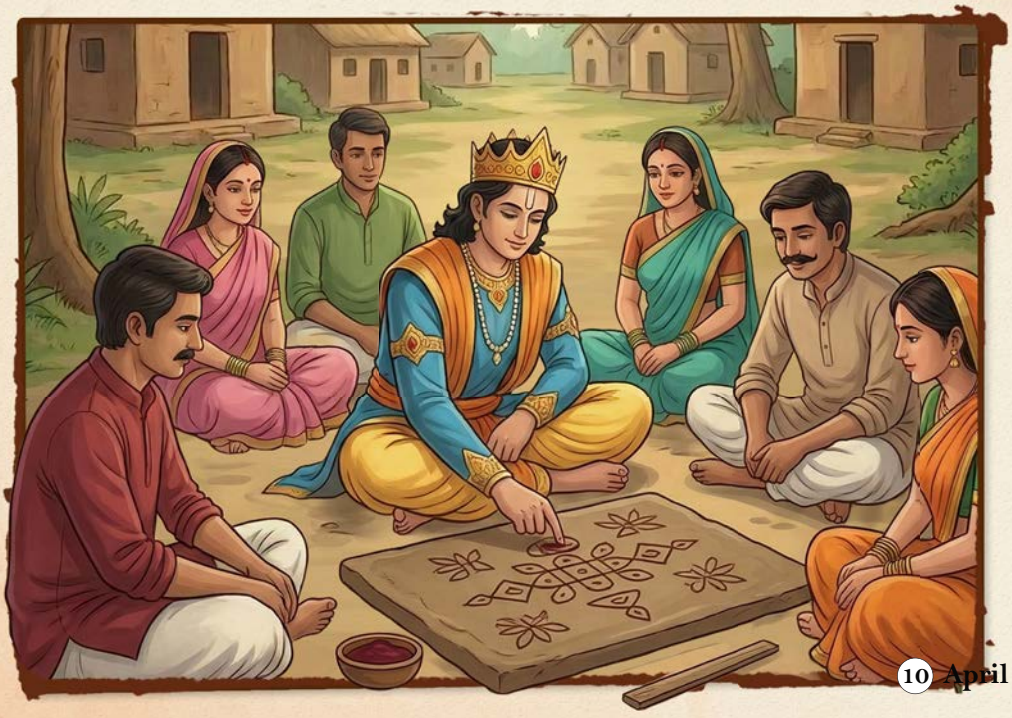

कुछ दिनों बाद भगवान ने लोगों को पेड़ की छाल के कपड़े बनाना सिखाया। इस प्रकार, भगवान ने लोगों को कई तरह की कलाएँ सिखाईं। कुछ दिनों बाद भगवान को शिकायत मिली कि लोगों में लड़ाई-झगड़े बढ़ गए हैं।

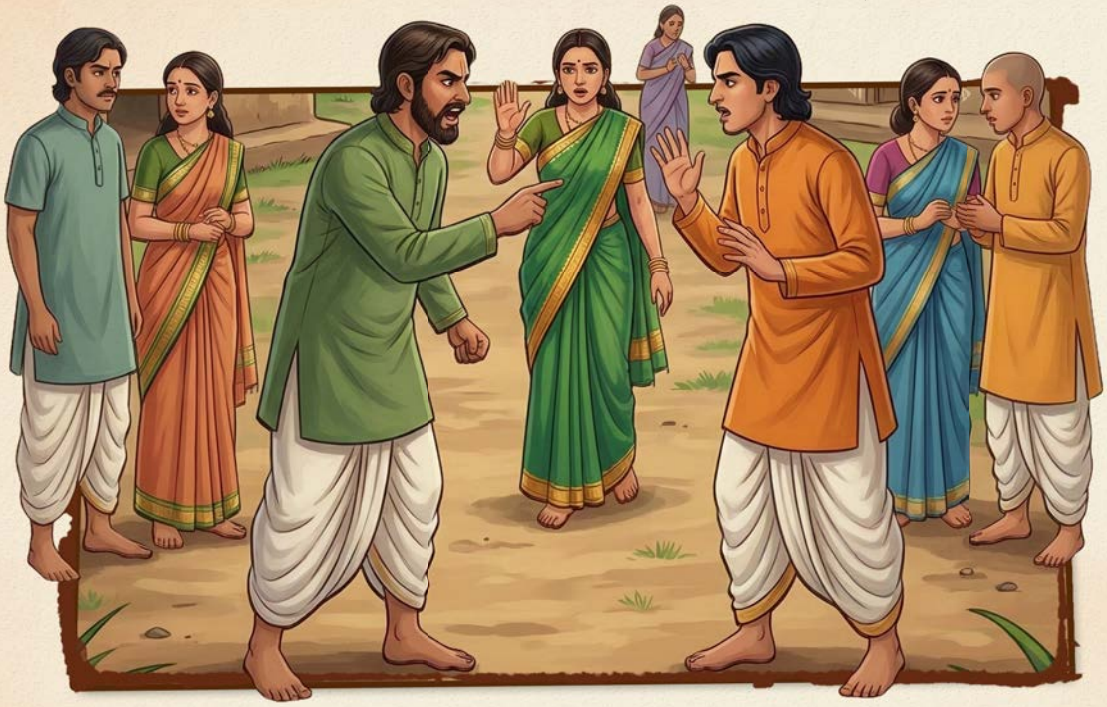

ऋषभदेव भगवान के पिता श्री नाभि कुलकर ने इन लड़ाई-झगड़ों को खत्म करने के लिए श्री ऋषभदेव को राजा बनाया। वे सबसे पहले राजा होने के कारण 'आदिनाथ' भी कहलाए। (आदि - शुरुआत)

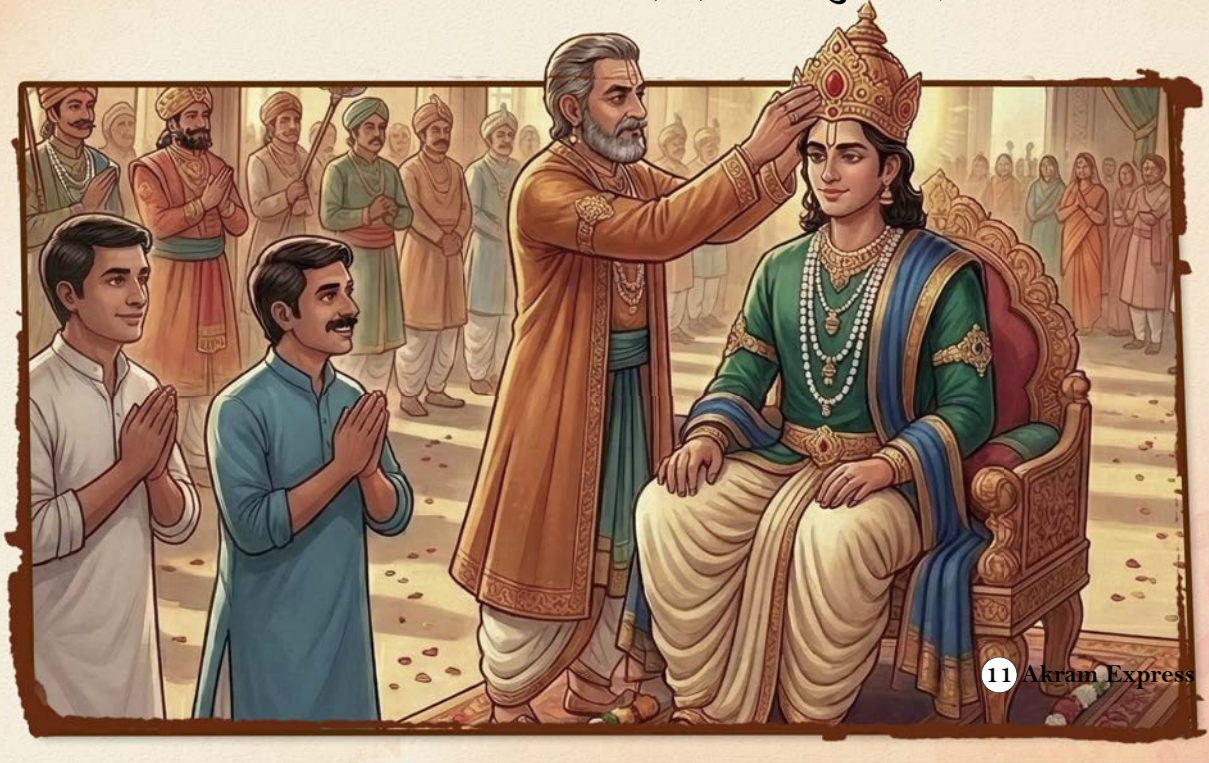

अब तक लोग बिखरे हुए रहते थे, लेकिन ऋषभदेव राजा बने, तो उन्होंने एक सुंदर शहर बसाया। शहर में बड़े-बड़े मकान और बड़ी सड़कें बनवाईं।

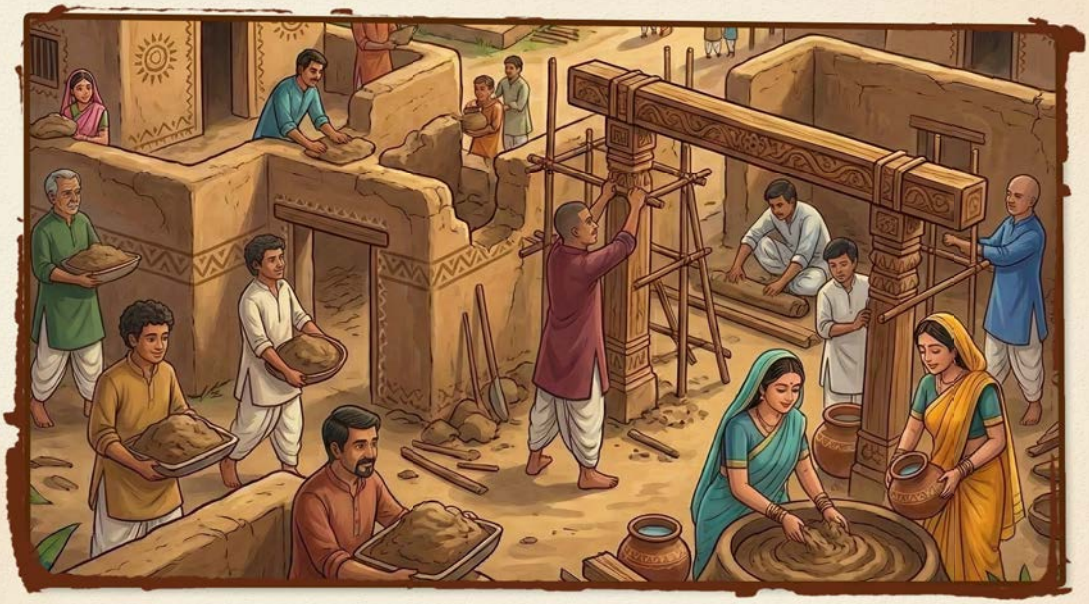

श्री ऋषभदेव भगवान ने लोगों को जंगल में रहने वाले जानवर, जैसे कि गाय, भैंस, घोड़ा आदि की मदद से खेती करना सिखाया। फिर लोगों को एक-दूसरे के साथ माल का लेन-देन करके व्यापार करना सिखाया। राज्य की रक्षा के लिए विभिन्न हथियार बनाना भी सिखाया।

भगवान ने अपनी बेटियों ब्राह्मी और सुंदरी को शिक्षा दी। क-ख-ग-वर्णमाला और गणित के पाठ सिखाकर भगवान ने शिक्षा की शुरुआत की।

इस तरह, काफी समय बीत गया। लोगों का जीवन शांति से बीत रहा था। ऋषभदेव भगवान ने अपने पुत्रों को अलग-अलग देशों का राज्य सौंपकर सादा जीवन जीना शुरू किया। उन्होंने एक साल तक ढेर सारा दान दिया और उसके बाद दीक्षा लेकर निकल पड़े।

गन्ने का रस

दस लाख साल पहले, गत चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर, श्री ऋषभदेव भगवान ने देवताओं की उपस्थिति में एक भव्य महोत्सव में दीक्षा ग्रहण की। प्रभु ने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन से मौन भी धारण कर लिया।

जब प्रभु भिक्षा लेने जाते तब भोले-भाले गाँववाले प्रभु का स्वागत करने के लिए प्रभु के चरणों में सोना, मोती और रत्नों के ढेर लगा देते। प्रभु मौन रहकर वहाँ से आगे चले जाते। भोजन के लिए उन्हें कुछ भी नहीं मिलता था। प्रभु को दीक्षा लिए तेरह महीनों से भी अधिक समय बीत चुका था। ४०० दिनों से प्रभु का उपवास चल रहा था। गाँव-गाँव विचरण करते हुए एक दिन प्रभु हस्तिनापुर जा पहुँचे।

दोपहर का समय था। भिक्षा के लिए प्रभु नगर में घूम रहे थे। प्रभु आगे और लोग उनके पीछे चल रहे थे।

लोग एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, 'प्रभु कुछ लेते नहीं हैं, प्रभु कुछ बोलते भी नहीं हैं।' नगर के लोग प्रभु को आभूषण भेंट कर रहे थे।

युवराज श्रेयांस कुमार अपने महल से बाहर निकले। लोगों के कोलाहल की आवाज उनके कानों में पड़ी। अति प्रसन्न होकर उन्होंने प्रभु के दर्शन किए। भावपूर्वक प्रभु के दर्शन करते ही श्रेयांस कुमार को ऐसा ज्ञान हुआ, जिससे उन्हें पता चल गया कि प्रभु भिक्षा में क्या ग्रहण करेंगे।

तुरंत ही श्रेयांस कुमार ने प्रभु को गन्ने के रस से भरे हुए सोने के घड़े भेंट किए।

श्रेयांस कुमार ने प्रभु से विनती की, 'भगवान, यह गन्ने का रस ग्रहण कीजिए।' प्रभु ने अपने हाथ की अँजुली आगे बढ़ा दी। श्रेयांस कुमार ने बहुत भावपूर्वक और दिल से प्रभु को गन्ने का रस पिलाया। इस तरह, प्रभु का प्रथम पारणा श्रेयांस कुमार ने गन्ने के रस से करवाया।

प्रभु के पारणा के प्रभाव से आकाश में पाँच दीपक प्रकट हुए।

प्रभु ऋषभदेव को तेरह महीनों तक भिक्षा में खाने-पीने लायक कुछ भी नहीं मिला उसके पीछे एक राज़ था।

अपने किसी पिछले जन्म में प्रभु ने एक किसान को अपने बैलों को लकड़ी से मारते हुए देखा। कारण यह था कि काम करते समय बैल अनाज खा रहे थे। निर्दोष प्राणियों को लाठी से पिटते देखकर प्रभु का हृदय द्रवित हो उठा।

बैलों को मार न पड़े और बैल अनाज भी न खा जाएँ, इसलिए प्रभु ने किसान को बैलों के मुँह पर छींका (मुँह बाँधने के लिए जालीदार थैली) बाँधने की सलाह दी। काम पूरा हो जाने के बाद किसान को छींका खोलना याद नहीं रहा। परिणामस्वरूप बैल तेरह घड़ी तक बिना अन्न-जल के बहुत कराहते रहे।

प्रभु की सलाह के कारण बैलों को अन्न के बिना रहना पड़ा। प्रभु ने बैलों को अन्न खाने से रोका, इस भूल का परिणाम यह आया कि प्रभु को तेरह महीनों तक भिक्षा नहीं मिली।

और इस तरह, प्रभु की एक छोटी सी गलती के कारण बैलों को तेरह घड़ी बिना अन्न-जल के रहना पड़ा। इसके फलस्वरूप दूसरे जन्म में प्रभु को तेरह महीने तक भिक्षा पाने में अंतराय का फल भोगना पड़ा।

मरुदेवी माता का केवलज्ञान

ऋषभदेव भगवान की दीक्षा के बाद, मरुदेवी माता उनकी याद में बहुत रोती थीं। रोने के कारण उनकी आँखों पर परत जम गई थी। उन्हें दिखना भी बंद हो गया था। वे अक्सर अपने पोते राजा भरत से ऋषभदेव भगवान का हाल-चाल पूछने के लिए कहती थीं।

एक दिन राजा भरत बहुत आनंद के समाचार लेकर मरुदेवी माता के पास आए और बताया, 'प्रभु जी को केवलज्ञान हुआ है। चलिए, हम प्रभु को वंदन करने चलते हैं।'

हाथी पर सवार होकर मरुदेवी माता और राजा भरत भगवान को वंदन करने निकले। समोवसरण के नज़दीक पहुँचते ही मरुदेवी माता को देवों और गंधर्वों का हर्षनाद सुनाई दिया। उस हर्ष और आनंद की ध्वनि (आवाज़) सुनकर मरुदेवी माता की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे और उन आँसुओं से उनकी आँखों पर जमी परत धुल गई और उन्हें साफ दिखाई देने लगा।

जिस क्षण मरुदेवी माता ने अपने पुत्र, यानी तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव के दर्शन किए, उस क्षण उनका हृदय अतिशय आनंद से भर गया और उसी समय उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ और आयु पूरी होते ही उसी समय उन्होंने मोक्ष गति प्राप्त की।

श्री बाहुबली का केवलज्ञान

ऋषभदेव भगवान के सौ पुत्र थे। भरत सबसे बड़े थे और बाहुबली उनसे छोटे। भगवान ने अयोध्या की गद्दी भरत को सौंपी और बाहुबली को तक्षशिला की सौंपी। भगवान को केवलज्ञान होने के बाद भरत और बाहुबली के अन्य भाई-बहन भी त्याग का मार्ग अपनाकर भगवान के साथ जुड़ गए।

बाहुबली का राज्य जीतने के लिए राजा भरत और बाहुबली के बीच एक बड़ा युद्ध हुआ। युद्ध में एक ऐसा क्षण आया जब बाहुबली ने राजा भरत को मार डालने केलिए हाथ उठाया। पर उसी क्षण बाहुबली को अपनी गलती का एहसास हुआ। अपने बड़े भाई को मारने के लिए उठाए हुए हाथ से उन्होंने अपने ही सिर के बाल उखाड़ लिए और राज्य, वैभव, संपत्ति, छोड़कर अपने पिता ऋषभदेव के पदचिन्हों पर चलते हुए राजपाट का त्याग कर निकल पड़े।

बाहुबली को विचार आया, 'भगवान ऋषभदेव के पास जाऊँ। उनके चरणों की सेवा करूँ। भगवान मेरा उद्धार करेंगे।' लेकिन फिर विचार आया, 'अभी जाना ठीक नहीं है। मेरे छोटे भाई वहाँ हैं। वे बड़े ज्ञानी बन गए हैं। और फिर उन्होंने मुझसे पहले सन्यास लिया है। इसलिए मेरे लिए वे वंदनीय हैं। मैं उम्र में उनसे बड़ा हूँ। तो अपने छोटे भाईयों को कैसे नमस्कार करूँ? नहीं, नहीं, मैं यहीं रहूँगा, तप करूँगा और स्वयं ही ज्ञान प्राप्त कर लूँगा।'

ऐसा सोचकर बाहुबली ने घोर तप करना प्रारंभ (शुरू) किया। उनका शरीर सूख गया। सिर पर बड़ी-बड़ी जटाएँ बढ़ गईं। वन के पशु-पक्षी आकर उन्हें परेशान करने लगे। लेकिन बाहुबली न तो हिलते थे, न ही चलते थे। वे चुपचाप ध्यान करते, दुःख सहते, न कुछ खाते न पीते। उनका निश्चय अडिग था।

हाथी जैसी उनकी काया बिल्कुल सूख गई। भँवरे जैसी आँखों के नीचे गहरे गड्ढे पड़ गए। भीम जैसा शरीर मानों हड्डियों का ढाँचा बन गया और चाँद जैसा रूप बिल्कुल मुरझा गया।

इस बात को बारह महीने बीत गए। लेकिन उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो रहा था।

भगवान ऋषभदेव को इस बात का पता चला कि बाहुबली पिछले बारह महीनों से तप कर रहे हैं, लेकिन उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो रहा है। इसका क्या कारण है? भगवान ने जाना कि बाहुबली ने सब कुछ छोड़ दिया है, लेकिन मान नहीं छोड़ा है। मान मिट जाता है, तभी सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है।

भगवान के पास दो साध्वियाँ थीं, ब्राह्मी और सुंदरी। वे भगवान ऋषभदेव की पुत्रियाँ थीं और बाहुबली की बहनें। भगवान ने दोनों बहनों से कहा, 'आप बाहुबली के पास जाओ और उनसे

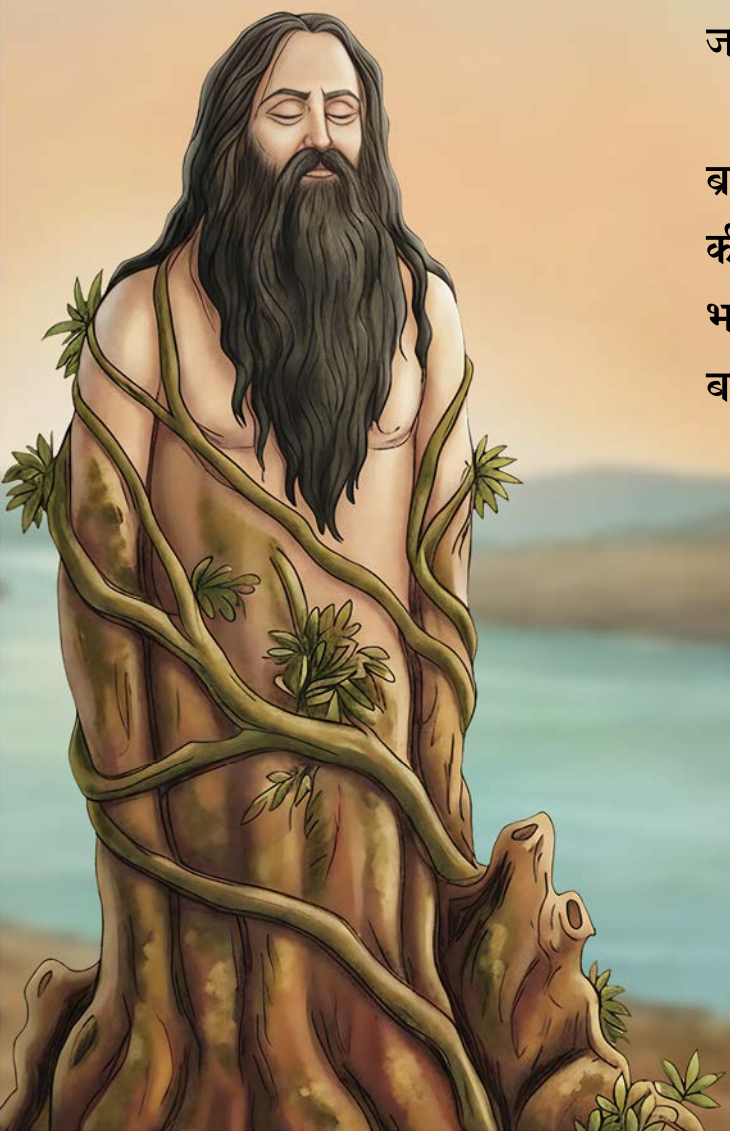

उनका मान छुड़ाओ। मान के कारण बाहुबली का तप निष्फल जा रहा है।'

साध्वीजीओं ने कहा, 'जैसी प्रभु की आज्ञा', ऐसा कहकर वे बाहुबली के पास आई। उन्होंने बाहुबली का कठिन तप और भक्तिभाव देखा। दोनों ने बाहुबली को प्रेमपूर्वक वंदन किया और धीरे से कहा, 'हे मेरे वीर! हाथी के ऊपर से नीचे उतरो। जो चाहिए वो मिलेगा।' इतना कहकर साध्वीजी चली गईं।

बाहुबली को विचार आया, "यहाँ न तो हाथी है, न ही हथनी! मैं कहाँ किसी हाथी पर बैठा हूँ?! ज़मीन पर खड़ा हूँ और खड़े-खड़े तप कर रहा हूँ। लेकिन मेरी बहनें झूठ तो बोलेंगी नहीं। तो 'हाथी के ऊपर से नीचे उतरो' का अर्थ क्या है?"

बाहुबली ने बहुत विचार किया और अचानक उन्हें अर्थ समझ में आया। 'मान रूपी हाथी है और उस पर मैं बैठा हूँ। मानी व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता। मुझे अपने भाईयों के पास जाना चाहिए और उन्हें वंदन करके उनसे माफी माँगनी चाहिए।'

ऐसा विचार आते ही बाहुबली का मान टूट गया। जैसे ही वे अपने भाईयों के पास जाने के लिए कदम बढ़ाते हैं, तुरंत ही उन्हें केवलज्ञान हो जाता है।

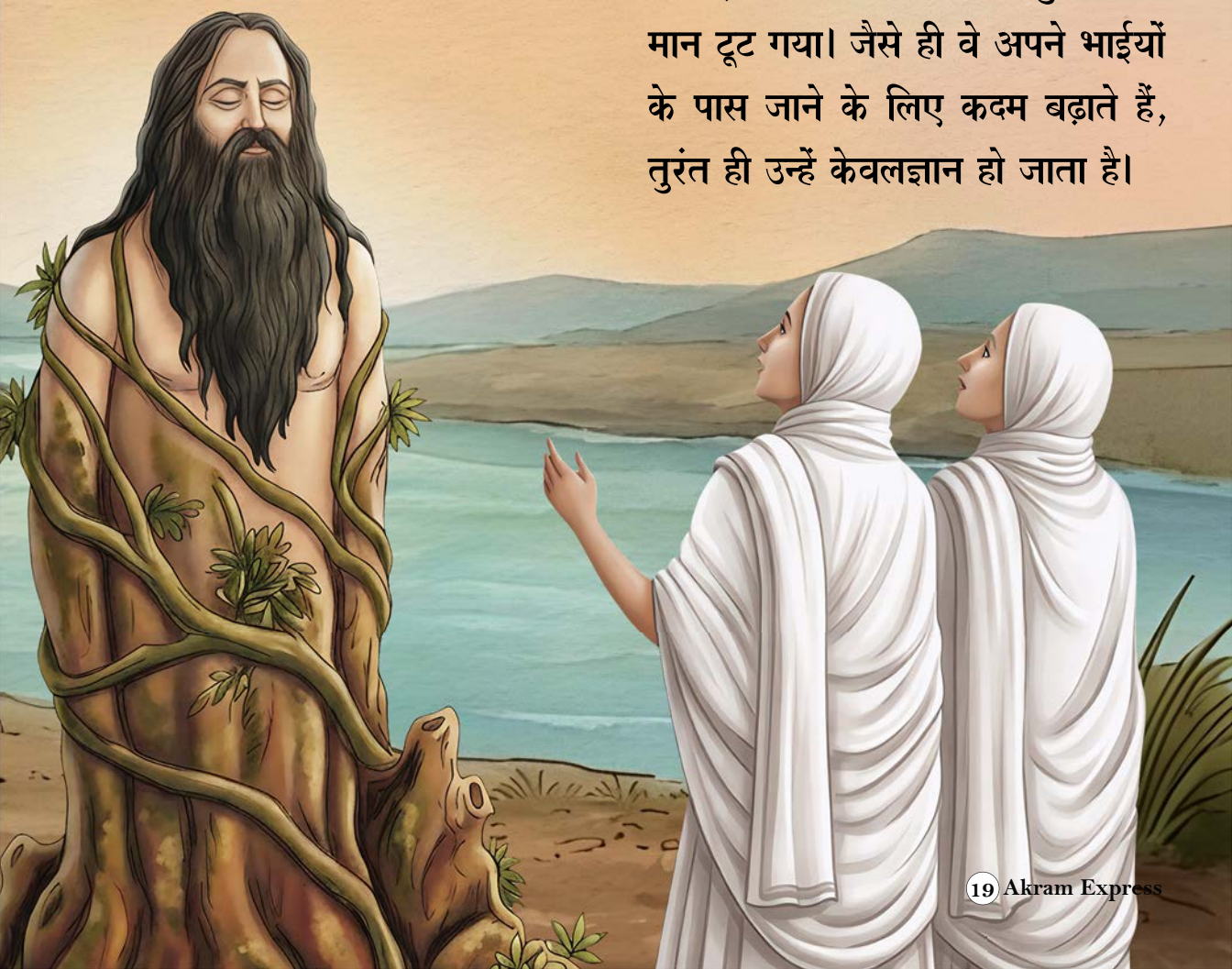

श्री भरत राजा का केवलज्ञान

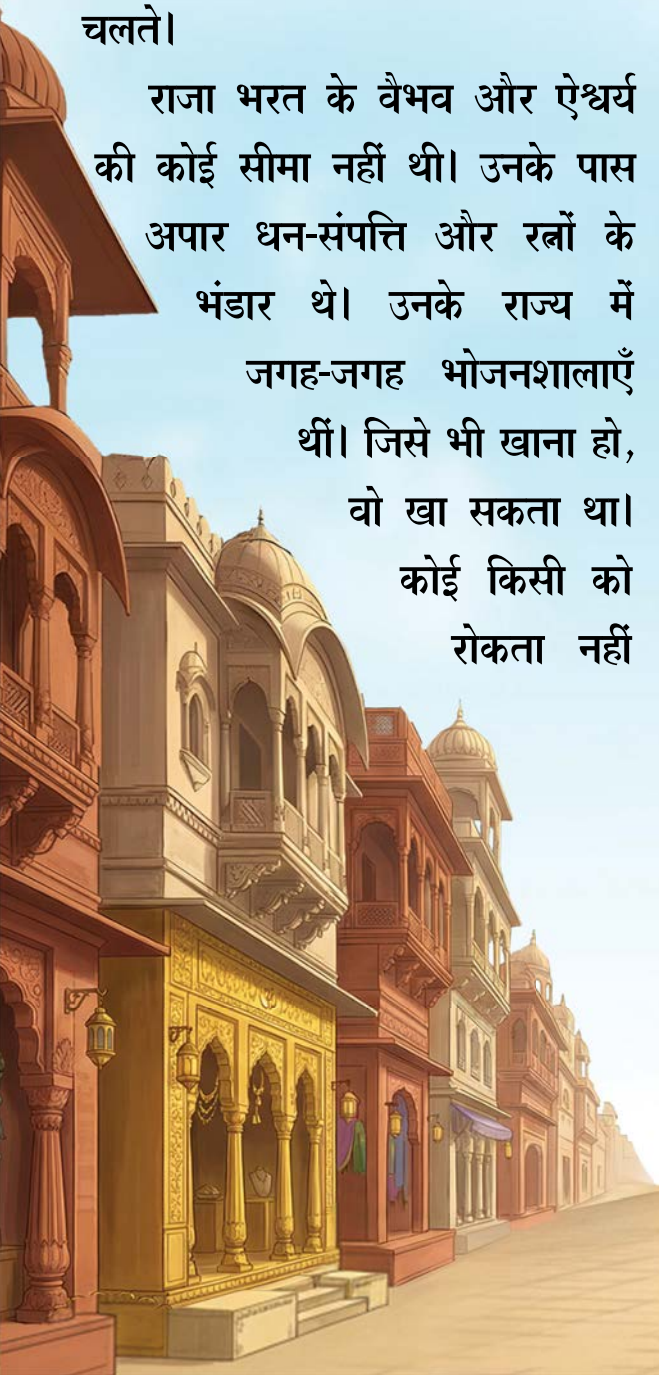

राजा भरत बहुत सुंदर तरीके से शासन करते थे। समय-समय पर भगवान ऋषभदेव के दर्शन करने जाते थे और उनकी आज्ञा के अनुसार ही चलते।

राजा भरत के वैभव और ऐश्वर्य की कोई सीमा नहीं थी। उनके पास अपार धन-संपत्ति और रत्नों के भंडार थे। उनके राज्य में जगह-जगह भोजनशालाएँ थीं। जिसे भी खाना हो, वो खा सकता था। कोई किसी को रोकता नहीं था। भूखे लोग भोजन करके राजा को आशीर्वाद देते जाते थे। राजा भरत के राज्य में जगह-जगह पाठशालाएँ और व्यायामशालाएँ भी देखने को मिलती थीं।

लोग कहते थे कि राजा भरत की प्रजा जैसी सुखी और समृद्ध प्रजा और कोई नहीं है। राजा भरत जैसा न्याय भी और किसी का नहीं है। सब लोग राजा भरत की प्रशंसा करते थे।

राजा भरत ने अद्‌भुत कारीगरी वाले बड़े-बड़े महल बनवाए थे। सभी महलों में सबसे सुंदर शीशमहल था। उस महल में चारों ओर शीशे थे। शीशे की दीवारें और काँच के दरवाज़े-खिड़कियाँ। वह महल इतना सुंदर था कि उसे देखते ही कोई भी दंग रह जाए। राजा भरत कई बार वहाँ जाते। शीशे से बने हौज में स्नान करते और शीशे से बने पलंग पर सो जाते। जब शीशमहल में रोशनी

होती, तब पूरा महल जगमगा उठता।

एक दिन स्नान करके राजा भरत ने सुंदर वस्त्र और आभूषण पहने। शीशमहल के बड़े शीशे में उन्होंने अपना सुंदर चेहरा देखा।

इतने में उनकी नज़र अपनी एक ऊँगली पर गई। राजा ने सोचा, 'यह ऊँगली इतनी बेढंगी क्यों लग रही है!' फिर ख़याल आया कि ऊँगली में अँगूठी नहीं है। अँगूठी के बिना ऊँगली बिल्कुल सुंदर नहीं लग रही थी। यह देखकर राजा भरत को लगा, 'तो क्या यह रूप केवल आभूषणों के कारण ही है? क्या असली रूप जैसा कुछ होता ही नहीं?!' और उन्हें जानने की इच्छा हुई कि गहनों के बिना दूसरे अंग कैसे दिखते हैं? उन्होंने सिर से मुकुट उतारा, कानों से कुंडल उतारे, हाथों से बाजूबंद उतारे और कमर से करधनी हटाई। सारे आभूषण दूर किए और फिर देखा, तो उनका रूप बिल्कुल ही बदल गया था।

भरत राजा को विचार आया, 'मैं कितना मूर्ख हूँ कि इस बनावटी रूप में रचा हुआ हूँ। यह सब बाहरी चीज़ों का ही रूप है न! मेरा असली रूप क्या है? इस बनावटी रूप में मैं अपना होश खो बैठा।' भरत राजा गहरी सोच में डूब गए। उन्हें लगा, 'आभूषण तो आज हैं और कल नहीं रहेंगे। शरीर का भी विनाश हो जाएगा। तो वास्तविकता क्या है?'

चिंतन करते-करते भगवान के साथ तार जुड़ गया। हृदय पवित्र होने लगा और पूरी तरह शुद्ध होने पर केवलज्ञान प्रकट हो गया!

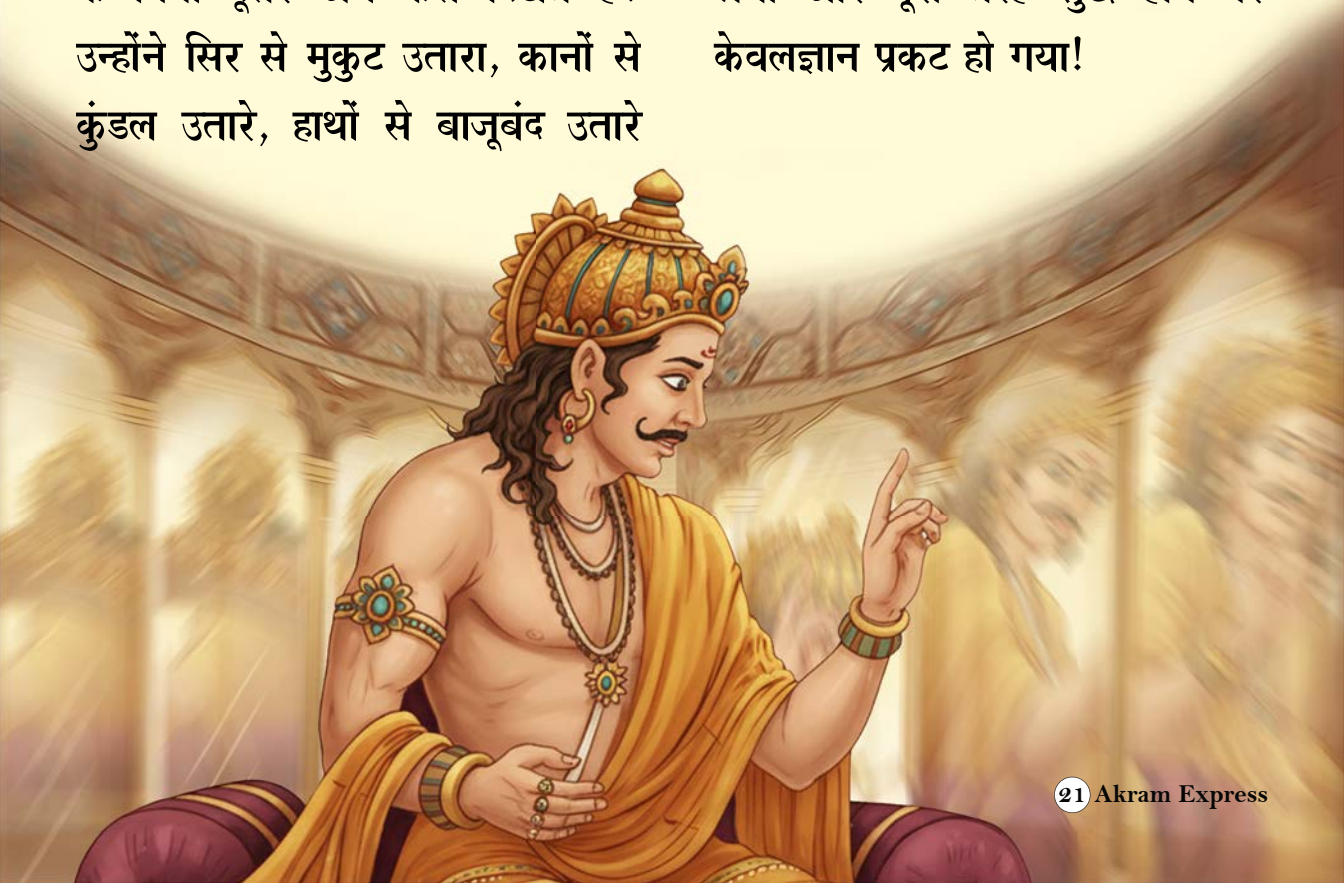

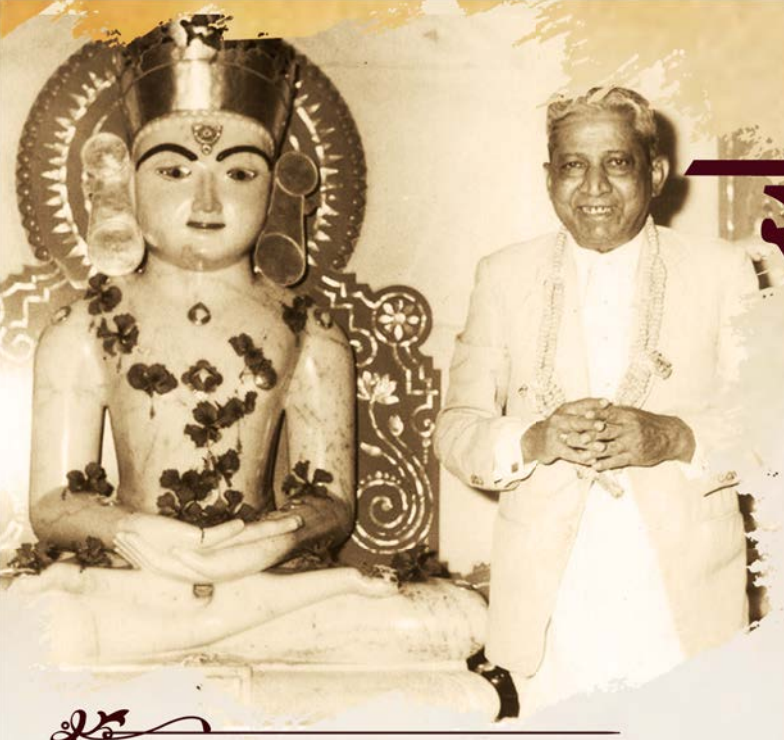

ज्ञानी कहते हैं...

ऋषभदेव भगवान के प्रथम पुत्र भरत चक्रवर्ती, भगवान की आज्ञा में रहकर अपना राजपाट चलाते थे। दादा भगवान ने कहा है कि राजा भरत को भगवान ऋषभदेव से अक्रम विज्ञान की प्राप्ति हुई थी। राज-वैभव भोगते हुए भी भरत राजा को यह लक्ष्य निरंतर रहता था कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ।'

शास्त्रों में क्रमिक ज्ञान और अक्रम ज्ञान का विभाजन किया गया है। क्रमिक ज्ञान यानी सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊपर चढ़ना और अक्रम यानी लिफ्ट से ऊपर जाना।

क्रमिक ज्ञान यानी अपने राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ धीरे-धीरे कम करते जाना और फिर आत्मज्ञान प्राप्त होना और अक्रम यानी पहले अंदर आत्मज्ञान प्रकट हो जाना और उसके बाद बाहर का सब क्लियर करना।

इस काल में अक्रम ज्ञान के प्रणेता, दादा भगवान हो गए।

तीर्थंकर भगवान के बारे में

बचपन में भगवान को बुरी संगत से बचाने के लिए देवता बाल रूप धारण करके उनके साथ खेलने आते हैं। भगवान कितना भी खेलें, उन्हें थकान नहीं लगती। उन्हें पसीना भी नहीं आता। उनके शरीर से हमेशा सुगंध आती रहती है और उनके खून का रंग सफेद होता है।

भगवान को बचपन से ही कई प्रकार के ज्ञान होते हैं। भगवान को केवलज्ञान होने के बाद वे पूरे ब्रह्मांड को देख सकते हैं,

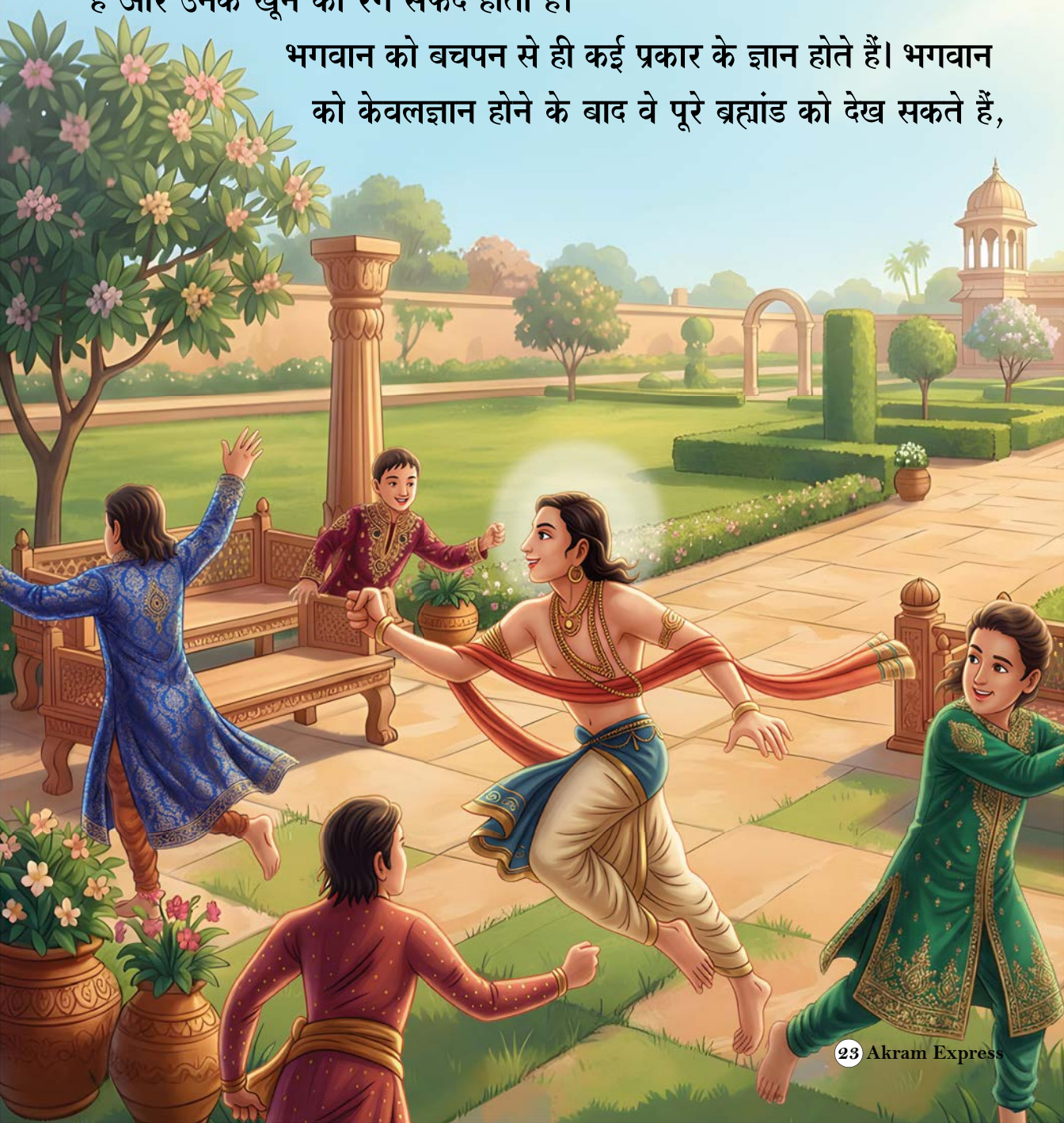

समझ सकते हैं और निरंतर अपने अनंत सुख में रहते हैं।

केवलज्ञान होने के बाद जब तीर्थंकर भगवान की देशना होती है, तब उसे सुनने के लिए बाघ, खरगोश, शेर, बकरी, सभी अपना डर, दुश्मनी भूलाकर पास-पास बैठते हैं। वहाँ बैठे हुए किसी को भी भूख, प्यास या थकान नहीं लगती। सब शांत हो जाता है।

भगवान की वाणी अद्‌भुत होती है। प्रत्येक जीव अपनी-अपनी भाषा में समझ जाता है। किसी को दुःख न हो, ऐसी होती है।

भगवान जहाँ पैर रखते हैं, वहाँ पेड़ झुककर उन्हें छाया देते हैं। काँटे अपने आप उल्टे हो जाते हैं, जिससे भगवान को चुभें नहीं। कमल आकर उनके पैरों को रक्षा प्रदान करते हैं।

भगवान के बाल नहीं बढ़ते। दाढ़ी-मूछ नहीं बढ़ती। नाखून नहीं बढ़ते।

भगवान जहाँ जाते हैं, वहाँ सभी ऋतुओं के फल एक साथ मिलते हैं। दूर-दूर तक महामारी नहीं होती। जीव-जंतुओं का प्रकोप नहीं होता। करोड़ों देवी-देवता भगवान की सेवा में हमेशा हाज़िर रहते हैं।

हर जगह खोजने के बाद अंत में चिली आलू के घर पर मिलता है और वह आलू से पूछता है कि वह क्यों कोको का साथ दे रहा है? आलू चिली को उसके बचपन की सिंगिंग की बातें याद दिलाता है। जब उसे सिंगिंग करने में बहुत मज़ा आता था। क्या आलू चिली से और कुछ भी कहना चाहता है? आज की बात चिली बताएगा।

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

आलू एक ही सांस में बोल रहा था और मैं भी उसे ध्यान से सुन रहा था और "इस कॉम्पिटिशन के चलते तुम यह बात भूल ही गए कि तुम्हें सिंगिंग कितना पसंद है! तुम्हें पता है? तुम कॉम्पिटिशन कोको के कारण या मेरे कारण नहीं हारे। तुम हारे, क्योंकि तुम भूल ही गए कि तुम्हें गाना कितना पसंद है। तुम यही सोचते रहे कि 'कोको को कैसे हराऊँ और मैं कैसे जीतूँ।' लगातार 'कोको कोको' करते-करते तुम भूल ही गए कि तुम उसे हराने के लिए नहीं गाते, तुम तो एन्जॉय करने के लिए गाते हो..."

'मुझे पता है कि तुम्हारे शरीर में इतनी जलन क्यों हो रही है, इसलिए

तो मैंने तुम्हारे लिए पार्टी रखी थी। जिसमें मैं तुम्हें एक सिक्रेट बात बताने वाला था। लेकिन तुम तो मेरी बात सुने बिना ही चले गए!'

'सिक्रेट? कौनसा सिक्रेट?' आलू को कौनसा सिक्रेट पता है जो मुझे नहीं पता। वैसे तो जंगल के सभी सिक्रेट मुझे पहले पता चल जाते हैं। तो यह कैसे मुझे नहीं पता?

'तुम्हें पता है? टाको घोड़ा पिछले साल रेसकोर्स में हिस्सा लेने के लिए शहर गया था। उसने ड्यु-ट्यूब पर बहुत सारे रेसकोर्स के वीडियो देखे और तय कर लिया कि 'मैं भी रेसकोर्स में हिस्सा लूँगा।' आलू की बात सुनकर मैं थोड़ा कन्फ्यूज़ हो गया। और फिर आलू मुझे आगे कहने लगा, 'अरे, रेसकोर्स का मतलब है, जहाँ सभी घोड़े एक साथ दौड़ते हैं और कौन फर्स्ट आता है, इसकी प्रतियोगिता होती है।'

उसकी यह बात सुनकर मैंने उसे चोंच मार दी और कहा, 'यह कहाँ सिक्रेट है? यह तो पूरे जंगल को पता है कि उसमें टाको हार गया था,

इसलिए वह वापस आ गया और अब रोज़ जंगल की सीमा पर गोल-गोल दौड़ा करता है। मुझे तो पार्सली ने बताया कि किसी को भी देखते ही वह दौड़ने लगता है। इसमें क्या सिक्रेट है?'

'सिक्रेट यह है कि मेरे अलावा किसी को सच्ची स्टोरी पता ही नहीं है। मैं तुम्हें बताता हूँ। टाको शहर गया। उसने रेसकोर्स में ऐडमिशन ले लिया और फिर बहुत प्रैक्टिस करने लगा। वहाँ प्रैक्टिस करते-करते उसे ब्राउनी मिला, जो उसका बेस्ट फ्रेन्ड बन गया। दोनों साथ-साथ रहते और दोनों एक-दूसरे को कहते कि 'देखना, मैं ही जीतूँगा!'

'ऐसा करते-करते प्रतियोगिता का दिन आ गया। टाको या ब्राउनी, दोनों में से कोई पूरी रात सो नहीं सका। टाको को पहली बार पार्ट लेने

का उत्साह था, तो ब्राउनी को पहला आने की इच्छा। सुबह दोनों अच्छे से तैयार हुए। फिर पता है, रेस में क्या हुआ?' मुझे पता था कि रेस में क्या हुआ था, तो भी मैंने मूर्ख की तरह आलू से पूछा, 'क्या हुआ?' तो मुझसे कहने लगा, 'ब्राउनी जीत गया और टाको हार गया।'

मैंने उससे कहा, 'अरे आलू, मुझे क्या, पूरे जंगल को इस बात का पता है। इसमें सिक्रेट क्या है?' आलू एकदम सैड होते हुए बोला, 'चिली, टाको सिर्फ रेस ही नहीं हारा था, वह रेस और अपना बेस्ट फ्रेन्ड दोनों ही हार गया था!'

क्या? टाको अपना बेस्ट फ्रेन्ड कैसे हार गया? ऐसा तो रेस में क्या हुआ था?

चलो खेलें...

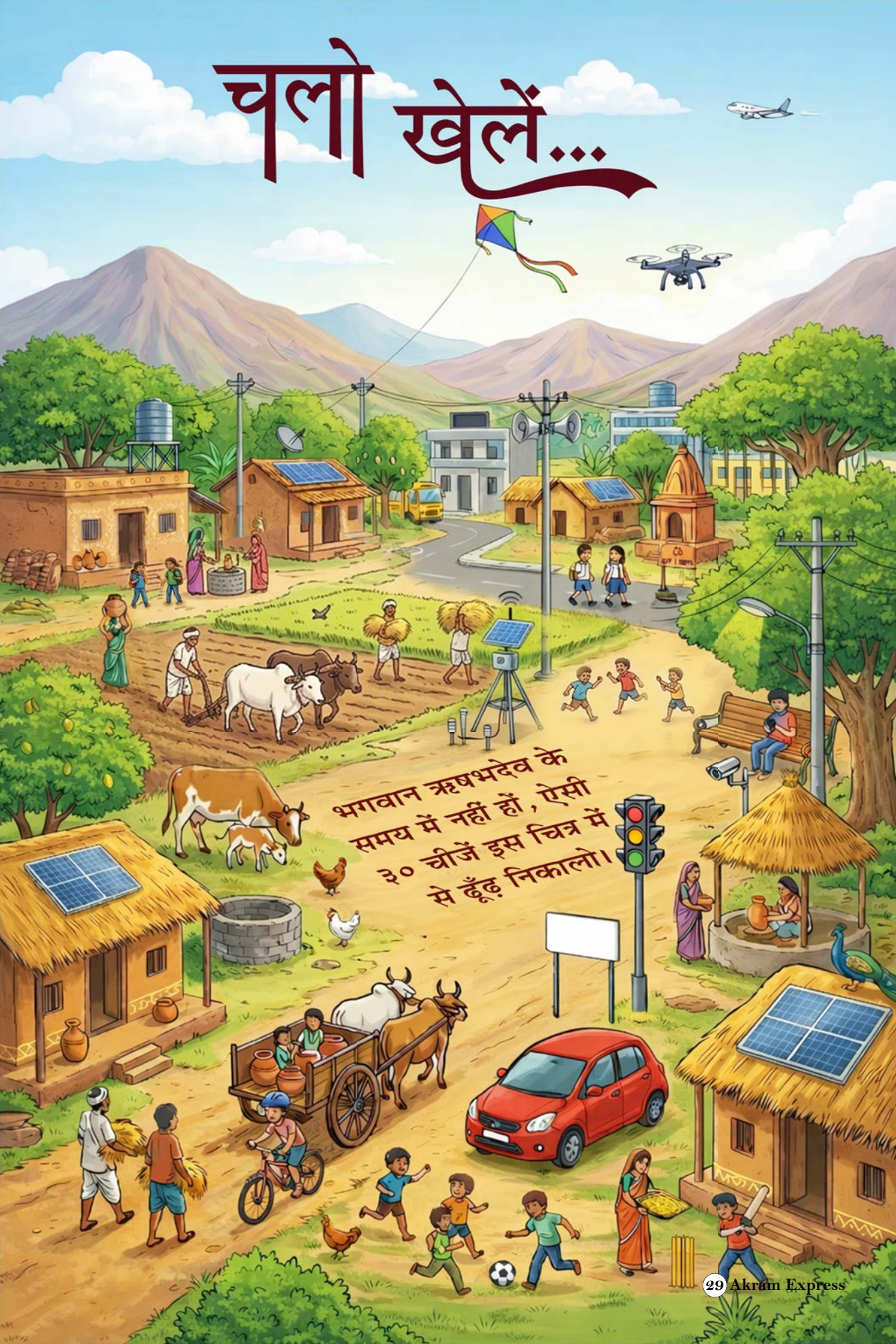

चलो खेलें...

नीचे दी हुई चीजें चित्र में कहाँ हैं, ढूँढ निकालो।

Summer camp

बालकों के लिए संस्कार सिंचन शिविर वर्ष २०२६

Center	4 to 7 Yrs.		8 to 12 Yrs.	
	Date	Contact No.	Date	Contact No.
Sim city	5 April	9313665562	19 April	9313665562
Ahmedabad	18, 19 April	8160628473	22, 25 and 26April	9904427029
Amreli	-	-	26 April	9408898792
Anand	-	-	3 May	7359529067
Baroda	19 April	9712981515	26 April	9998008435
Bharuch	-	-	26 April	8320710688
Bhavnagar	19 April	9409467181	3 May	9558860259
Bhuj	19 April	9429297223	6 May	9537286855
Dhoraji	-	-	3 May	8238714972
Gandhidham	-	-	19 April	9428310787
Jamnagar	19 April	9723147318	3 May	9879551518
Junagath	-	-	10 May	8360143009
Mehsana	12 April	8469264605	26 April	9427650382
Morbi	29 March	9725199144	26 April	9978633035
Mumbai	Borivali & Mulund 11 April Ghatkopar 12 April	8652890066	12 April	9867989202
Rajkot	26 April	8849043362	3 May	7779023726
Surat	29 March	9725198454	15 March	9574008498
Veraval	3 April	8980483683	8 May	9712191887
Valsad	-	-	26 April	9714909994

૧ સમર કૈમ્પ માં હિસ્સા લેને કે લિએ આપકે નજ़દીક કે સેન્ટર મેં રજિસ્ટ્રેશન કરવાના આવશ્યક હૈ। રજિસ્ટ્રેશન ચાર્જ નૉનરિફંડેબલ હૈ।

૨. બાલક કી ઉમ્ર ઔર કક્ષા કે આધાર પર કિએ ગએ વર્ગીકરણ કે અનુસાર જો તારિખ તય કી ગઈ હૈ ઉસ અનુસાર રજિસ્ટ્રેશન કિયા જાએગા। જિસ કૈમ્પ કે લિએ રજિસ્ટ્રેશન કરવાના હૈ ઉસ કૈમ્પ કી તારીખ કે ૫ દિન પહલે રજિસ્ટ્રેશન બંદ કર દિયા જાએગા। ઉસકે બાદ રજિસ્ટ્રેશન કરવાને કે લિએ તત્કાલ ચાર્જ લિયા જાએગા।

૩. સીમંધર સિટી સમર કૈમ્પ કે લિએ રજિસ્ટ્રેશન ત્રિમંદિર સંકુલ કે 'સ્ટોર ઑફ હૈપીનેસ' મેં શામ ૫:૦૦ સે ૬:૩૦ બજે કે બીચ સ્વયં આકર જિસ કૈમ્પ કે લિએ રજિસ્ટ્રેશન કરવાના હૈ ઉસકે પાઁચ દિન પહલે તક હો પાએગા। યહ રજિસ્ટ્રેશન ૨૨ માર્ચ સે શુરૂ કિયા જાએગા।

સંપર્ક સૂત્ર : ૯૩૧૩૬૬૫૫૬૨

जैसे श्री ऋषभदेव भगवान थे, वैसे ही
आज श्री सीमंधर स्वामी भगवान प्रत्यक्ष
विराजमान हैं...
उनकी एक झलक देखने के लिए नीचे
दी गई लिंक पर क्लिक करें।

और... और... और...
११ अप्रैल को इसी लिंक पर देखें कि
महाविदेह क्षेत्र वास्तव में कितना
विशाल है!!!
देखना भूलिएगा मत...

https://dbf.adalaj.org/VeVKQjJn